शान्ति की खोज में

✻ ब्रह्माकुमार उमेन्द्र कुमार सिंह, कुशीनगर

एक महीने के अवकाश के दौरान भारत भ्रमण करके जब वापस कुशीनगर आया तो मेरे पुलिस मित्रों ने पूछा कि आपने क्या देखा, क्या पाया। मेरे मन से आवाज निकली कि अशान्ति से भरे माहौल में कहीं भी शान्ति नहीं मिली। मेरे एक मित्र ने बताया कि यहीं फाजिलनगर (कुशीनगर) में एक संस्था है जिसका नाम ॐ शान्ति (ब्रह्माकुमारीज़) है, आप वहाँ जायेंगे तो शान्ति ज़रूर मिलेगी। मैंने सोचा, जिस शान्ति की खोज में भारत भ्रमण करते एक मास बीत गया, फिर भी नहीं मिली, चलो एक दिन ॐ शान्ति में ही चलकर देखें, क्या पता वहीं मिल जाये।

अगली शाम हम उस भाई के साथ ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय शाखा में पहुँच गये। वहाँ लगी ब्रह्मा बाबा व मम्मा की तस्वीरों पर जब ध्यान गया तो लगा, सारी थकावट दूर हो गयी, अपार शान्ति महसूस होने लगी। हमें स्थानीय शाखा की निमित्त बहन व भाई से मिलवाया गया, बहन ने बताया कि आपको एक सप्ताह का कोर्स करना पड़ेगा और सूरज भाई ने हमारी जिज्ञासा को देखते हुए एक ज्ञानामृत पढ़ने के लिए दे दी। पत्रिका का पहला पेज पढ़ते ही हमको बहुत अच्छा लगा।

नया जन्म

इसके बाद निमित्त बहन ने हमसे एक फार्म भरवाया और हमारा एक सप्ताह का कोर्स शुरू हो गया। पहले ही दिन के कोर्स से हमें लगा कि हमारा सार्थक जीवन अब शुरू हुआ है, हमारा नया जन्म अब हुआ है। सप्ताह का कोर्स धीरे-धीरे पूरा हो गया। मैं जहाँ भी रहता, चाहे ड्यूटी पर या कहीं भी, ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ता रहता और सुबह-शाम जब मौका मिलता मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने आश्रम पर चला जाता। यदि नहीं जा पाता तो मोबाइल फोन के ज़रिये सुन लेता तथा उन्हें नोट भी करता। बाबा के महावाक्य दिल की गहराई तक पहुँच जाते हैं तथा परम शान्ति का अनुभव होता है।

पुरानी यादें

पाँच भाई-बहनों में मैं तीसरे स्थान पर हूँ। बहुत सुखी परिवार था पर अचानक 18.08.1992 को माता जी का देहान्त हो गया, मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी और पिताजी नौकरी पर वाराणसी में थे, घर (बलिया जिले के बैरिया गाँव) पर मैं और मेरा छोटा भाई व मेरी छोटी बहन ही थे। मेरी उम्र उस समय 20 वर्ष, भाई की 15 वर्ष

और छोटी बहन की उम्र 10 वर्ष थी, पूरी ज़िम्मेवारी मेरे कन्धों पर आ गयी। आनन-फानन में मात्र छः महीने बाद 23.2.1993 को मेरी शादी कर दी गयी। अभी हम माता जी की मृत्यु का गम भुला ही नहीं पाये थे कि मात्र चार महीने बाद हमारी युगल नाराज होकर अपने मायके चली गयी। समय अनुसार परिस्थितियों से समझौता तो करना पड़ा पर शान्ति की तलाश में भटकता रहा।

थोड़ी खुशी

सन् 1994 में उत्तर प्रदेश पुलिस में मेरी नौकरी लग गयी। युगल भी हमारे घर वापस आ गयी। फिर पुत्र रत्न की भी प्राप्ति हुई लेकिन नौकरी पर रहते घर की चिन्ता हमेशा बनी रहती थी, मन हमेशा अशान्त रहता था। पिताजी रिटायर्ड होकर घर पर आ गये लेकिन माताजी के बिना पूरा परिवार अधूरा लगता था। मैं जब भी छुट्टी लेकर घर जाता, माताजी

के बिना मन अशान्त रहता। मैं बार-बार भगवान से यही विनती करता कि प्रभु, एक बार हमें हमारी माताजी से मिला दो। जब माता जी की याद आती, कलेजा फट जाता था।

सहारा ॐ शान्ति का

माताजी को गुज़रे लगभग 21 वर्ष बीत चुके थे, मन को शान्ति नहीं मिल रही थी, सब कुछ होते हुए भी खालीपन, अकेलापन महसूस होता था। शान्ति की खोज में एक माह का अवकाश लेकर भारत-भ्रमण पर निकल गया, सबसे पहले कोलकाता में स्वामी विवेकानन्द के मठ, फिर कालीघाट, फिर दक्षिणेश्वर गया। बाद में मुम्बई चला गया, जहाँ मुम्बा देवी, सिद्धिविनायक, शिरडी के साईं बाबा के दर्शन किये। सबसे एक ही प्रार्थना करता, हमारे मन को शान्ति प्रदान करो प्रभु। मुम्बई में 10 दिन रहने के बाद दिल्ली चला आया। वहाँ राधास्वामी संस्थान में गया। फिर माँ वैष्णो देवी (जम्मू-कश्मीर) गया। वहाँ तीन दिन रहने के बाद वापस बाबा गोरखनाथ मंदिर गया। फिर दो दिन बाद अपने गांव बैरिया गया जहाँ स्वामी जी महाराज बाबा के दर्शन किए और लौटते समय गोपालगंज जिले (बिहार प्रान्त) में माँ थाँवे वाली महारानी के पास झोली फैलाई। उसके बाद कसया (कुशीनगर) में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल पर गया और जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के सानिध्य में पावानगर (फाजिलनगर) गया मगर मन को शान्ति नहीं मिली। लेकिन दिनांक 26.5.2013 को शाम को जैसे ही फाजिलनगर में 'ॐ शान्ति' आश्रम में ब्रह्मा बाबा व मम्मा का मनमोहक चित्र देखा, मन को अपार शान्ति मिली।

ममता-मोह का नाश

जिस शान्ति की खोज में मैं दर-दर भटकता फिर रहा था वह शान्ति 'ॐ शान्ति' आश्रम पर जाने पर मिली। मैं अपनी माताजी की आत्मा की शान्ति के लिए 21 वर्षों से परेशान था, उसका समाधान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आकर हुआ। यहाँ हमें सिखलाया गया कि आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, कभी मरती नहीं, अपना पार्ट बजा कर चली जाती है और 5000 वर्ष बाद फिर उसी समय पर, वही पार्ट बजाती है। इससे हमको अपार शान्ति मिली और लगा कि माताजी फिर 5000 वर्ष बाद हमको जरूर मिलेंगी इसी समय। हमारे मोह-ममता का नाश हो गया और पल-पल शान्ति का अनुभव होने लगा। दिल से यही गीत निकलने लगा

'बनाया प्रभु ने है अपना,
दिया सुख हमें है कितना,
न इतने तारे अम्बर में,
न सागर में ही जल इतना'

❖

मैंने जाना.. पृष्ठ 42 का शेष

उन्हें बड़ी सहजता से, आगे के लिए पाठ पढ़ाकर पार कराता है। आज मैं एम.एम.यूनिवर्सिटी, मुलाना (हरियाणा) में प्रशासनिक पद पर कार्यरत हूँ। यहाँ यूनिवर्सिटी में ही मुझे फ्लैट मिला है। यूनिवर्सिटी के पास में ही ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र है। यहाँ के सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन मुझे बहुत प्यार करती हैं। मेरे पति जयपुर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में विपणन प्रबंधक (Marketing manager) के पद पर कार्यरत हैं। बाबा के ज्ञान में नहीं हैं परन्तु सहयोगी हैं और मन ही मन में बाबा को मानते भी हैं। जब भी मुझ पर कोई परेशानी आती है तो मुझे याद कराते हैं कि बाबा को याद करो। मेरा बेटा और मेरी माँ मेरे साथ ही रहते हैं। इन दोनों के प्रति अपनी ज़िम्मेवारियों को निभाते हुए आज मैं अपने आप को बहुत हलका महसूस करती हूँ। मेरे सर्व सम्बन्ध शिव बाबा से हैं और बाबा से यही चाहना है कि चाहे कुछ भी हो जाये परन्तु मेरा और बाबा का प्यार हमेशा बढ़ता रहे। ❖